रविवार, दिनाँक **14-07-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

हम घर साजन आए हमारे।

हमरा भाग्य जगाने को।।

जीवन का इक मकसद देकर.....।

परउपकार कराने को।।

हम घर साजन.............

परउपकार करो तुम मन से।

पूरी लगन में आ कर के।।

परउपकार करो तुम तन से.....।

अनथक परिश्रम दिखा कर के।।

हम घर साजन.............

परउपकार है उत्तम भक्ति।

परउपकार ही आत्मिक शक्ति।।

परउपकार से समझ सकोगें....।

अपना बल और अपनी हस्ती।।

हम घर साजन.............

परउपकारी नाम नहीं चाहता।

परउपकारी मान नहीं चाहता।।

वह तो अकर्त्ता भाव में रहकर.....।

बनता है सब का सुखदाता।।

हम घर साजन.............

परउपकार सजन- भाव का सूचक।

परउपकार भगवान का द्योतक।।

इसीलिए कहते हैं सब से........।

परउपकार अपनाओ तुम।।

हम घर साजन.............

साजन आए बजी बधाई।

देख देख मैं उन्हें हर्षाई।।

कैसी है ओ सूरत इलाही..।

सजनों मेरे मन को भाई।।

हम घर साजन............

इस संदर्भ में सजनों बताओ कि परोपकार प्रवृत्ति में ढलकर, स्थिर कौन बना रह सकता है?

'मौन'।

जिसके हृदय में सजनभाव और नज़रों में समभाव हो, वह समदृष्टि ही परोपकार कमाने के योग्य बना रह सकता है। इस तथ्य के दृष्टिगत समभाव-समदृष्टि जो कि युवा-अवस्था का भक्तिभाव है, उसकी महत्ता और महत्त्व समझते हुए, समयानुसार वांछित परिवर्तन स्वीकारना होगा। इसी परिवर्तन के विषय में सात सितम्बर को विस्तृत बात होगी। तब तक अपने आप को मजबूत कर लो और इस परिवर्तन को स्वीकार लो। अब आगे भजन सुनोः-

सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी, तारो ते पार उतारो महाबीर जी।

काम क्रोध हैं दुश्मन भारी, इनको मार मुकाओ महाबीर जी।

शिव ब्रह्मा तुहाडा ध्यान लगावे, नारद जी वी बीन बजावे महाबीर जी।

शेष गणेश तुहाडा हर जस गावे, इन्द्र वी दिल विच हर्षावे महाबीर जी।

तुलसी दास तुहाडा ध्यान लगावे, विभीषण नूं अमर बनाया महाबीर जी।

लंका जीत अयोध्या नूं आवन, भरत नूं राम मिलाया महाबीर जी।

दिन रात भैणों तुसीं नाम ध्यावो, गदा महाबीर जी दा हृदय विच वसाओ।

दुष्टां नूं मार मुकाया महाबीर जी, सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी।

मैं दासी नूं समदृष्टि कर देओ, भवसागर से पार उतारो महाबीर जी।

सुन लौ मेरी बेनती तारो महाबीर जी, तारो ते पार उतारो महाबीर जी।

सजनों इस भजन में सच्चेपातशाह जी कह रहे हैं कि हे महाबीर जी ! मुझे समदृष्टि कर दो। इसका सीधा सा अर्थ है कि जब तक इन्सान समदृष्टि नहीं होता, तब तक वह भवसागर से पार नहीं हो सकता। यहाँ सजनों समभाव-समदृष्टि की युक्ति का महत्त्व और बाल-अवस्था के भक्ति भाव छोड़ युवा-अवस्था का भक्ति भाव अपनाने का लाभ समझ आता है। जानो इस सशक्त भक्ति भाव को अपनाने का पुरुषार्थ दर्शाने पर ही, जगत उलझना के कारण, ख़्याल/मन में घर कर गए व स्वभावों में रच-बस गए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि चोरों से छुटकारा पाया जा सकता है। यहाँ यदि हम वर्तमान स्थिति पर

दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा कि आजकल हम नकारात्मक ख़्यालों में इतने उलझ गए हैं कि इस उलझना के कारण हमारे लिये सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति के अनुसार नाम-अक्षर चलाना भी दुर्लभ हो गया है। इस सन्दर्भ में आप सजनों को यह महसूस भी हो रहा होगा कि इतने सालों बाद भी यह कार्य हमारे लिये दुर्लभ व असम्भव ही बना हुआ है। इसीलिए सजनों दिनचर्या के समय हमारे स्वभावों द्वारा काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार का स्पष्ट दर्शन होता है परन्तु यथार्थ जीवन में आप सब मानोगे कि यह सर्वदा अनुचित यानि सही नहीं है। यह तो जन्म का भारी रोग है जो इन्सान को सारा दिन संकल्प-विकल्प में उलझाये रखता है। तभी तो मन में हर क्षण यानि निरन्तर कुछ न कुछ (कभी इसके बारे में तो कभी उसके बारे में) सांसारिक चल रहा होता है। देखा जाए तो हमारे पास अक्षर चलाने का, सुरत को शब्द संग जोड़ने का और स्थिरता में बने रहने का समय ही नहीं है। इसलिए हम मानसिक रूप से कमजोर हो ऐसा करने का पुरुषार्थ ही नहीं जुटा पाते और इन पाँच विकारों के दुष्प्रभाव से अज्ञानमय अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं। इसी कारण आत्मज्ञान हमारी पकड़ से पूर्णतः छूट गया है यानि कोसों दूर हो गया है और हम भौतिकवादी बन संसार के ही हो कर रह गये हैं। जानो यह अपने साथ व अपने संगी-साथियों के साथ वैर कमाने की बात है। यह नकारात्मक भावों में हर क्षण हैरान-परेशान रहने जैसी त्रुटिपूर्ण यानि बुरी बात है। यकीन मानो सजनों इतना कुछ होने पर भी, पुनः आत्मिक स्वभावों को अपनाने में समर्थ बनने की एक आशा-किरण है और वह आशा किरण है - सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण-शरण में स्थिरता से शीश अर्पण कर देना। यहाँ जब शीश अर्पण कहते हैं तो उससे तात्पर्य है कि उनके जो शास्त्र-विदित जीवनदायक विचार हैं, उनको दिनचर्या के समय आत्मसात करते हुए कर्मफल से विमुक्त बने रहना। ऐसा हमें इसलिए करना चाहिये क्योंकि सच्चेपातशाह जी ने स्पष्ट शब्दों में बताया है कि समस्त देवतागण, इन्द्र, कुबेर, शेष, महेश जो भी हैं सब के सब अपनी शान को प्राप्त रहने हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्तियों का सहर्ष पालन करते हुए ही आदरणीय व पूजनीय हैं। फिर जो भी इन देवगणों में उलझता है और सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के ज्ञान से दूर रहता है, वह नादान से भी नादान है। यहाँ विचार करने की बात है कि जिन शहनशाह के संग रहकर उन देवगणों ने अपनी-अपनी उपाधि प्राप्त की यानि जिन्होंने खुद किसी से कुछ प्राप्त किया हो वह भला किसी दूसरे को क्या दें सकते हैं? तो ऐसे ही फिर घण्टियाँ बजाते न फिरते रहो। इसके स्थान पर सजन श्री शहनशाह हनुमान जी से सीधा सम्पर्क स्थापित करो क्योंकि केवल वह ही भक्त-शिरोमणि हैं। भक्त-शिरोमणि से यहाँ तात्पर्य है - सबसे ज्ञानवान। ज्ञात हो सजनों भक्ति के द्वारा ही

ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया चलती है। इसी क्रिया द्वारा भगत सब कुछ प्राप्त कर लेता है। सब प्राप्त करने के पश्चात वह उस ज्ञान का इस्तेमाल करना सुनिश्चित करता है और संसार से निर्लेप रहते हुए, निष्पाप सब कुछ करने में समर्थ बना रहता है। इस महानता के दृष्टिगत सजनों अपने-अपने जीवन में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के होने के महत्त्व को समझो व अपने सजन कहलाओ।

इस सन्दर्भ में जानो कि जब जीवन का हर कार्य चाहे वह गृहस्थ का हो या फिर परमार्थ का हो, उन शहनशाह की चरण-शरण में रहते हुए, सुदृढ़ता से यानि उनके वचनों अनुसार किया जाता है, तो वह प्रसन्न होकर उस सुरत को अपने इष्ट का दर्शन करवा देते हैं। अतः इस बात को समझते हुए सजनों समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपना कर अपनी सुरत को ताकतवर बनाना है। इस तरह शब्द में जो परमात्मा है, उस यथार्थ स्वरूप का दर्शन पाना है व उसी यथार्थता अनुसार जीवन व्यतीत करते हुए परोपकार कमाना है और जन्म की बाज़ी को जीत जाना है। सजनों आप सब भी ऐसा पुरुषार्थ कर सकते हो क्योंकि प्रत्येक को अपना जीवन बनाने का अधिकार है। अतैव अपने इस मौलिक अधिकार का, पूर्ण अधिकारपूर्वक प्रयोग करो। ऐसा करने से निश्चित रूप से मस्तक की ताकी खुल जाएगी। फिर हृदय में प्रवाहित आत्मज्ञान प्रकाशित व शोभित होगा। यकीन मानो सजनों आप सजन भी ख़्याल-ध्यान प्रकाश वल स्थिर करके, आत्मज्ञान प्राप्त कर सकते हो और आत्मिक ज्ञानी बन उत्तम पुरुष कहला सकते हो। इस हेतु मन में इसके प्रति प्रबल इच्छा पैदा करो। कहने का तात्पर्य यह है कि अन्य सभी इच्छाएँ त्यागकर इस सर्वोत्तम इच्छा को प्रबलता से पूर्ण कर शक्तिशाली हो जाओ। अब आगे सुनोः-

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

बारांदरी विच बैठ गये भगवन, और करने लगे सलाह ओ - सजनों।

समभाव समदृष्टि दा, प्रसंग रहे ने चला ओ - सजनों।।

जो शरीर दा ध्यान लगावेगा, ओ जन्म मरन दे चक्कर दे विच राहवेगा।

इलाही सूरत महाराज जी दी जेहड़ा ओ दर्शन पावेगा।

ओ त्रिकालदर्शी कहावेगा, ओ त्रिकालदर्शी कहावेगा सजन।।

समभाव समदृष्टि नूं समझ के ते, कोई विरला पहरेवा पावेगा।

जैंदी इक निगाह इक है दृष्टि, ओ हीरे रत्नां दा सेहरा सजावेगा।

ओ हीरे रत्नां दा सेहरा सजावेगा, ओ हीरे रत्नां दा सेहरा सजावेगा सजन।।

समभाव देखो सजनों, जनचर बनचर, समभाव देखो जगत जहान।

ओथे जात पात न अमीरी गरीबी, एहो दृष्टि सजनों राहवे महान।

एहो दृष्टि सजनों राहवे महान, एहो दृष्टि सजनों राहवे महान।।

समभाव समदृष्टि दा स्कूल खोलने लगे, कोई विरला दाखिल होवेगा।

खोलेगा ओ जगत दा वाली, ओथे फ़ीस नहीं जे कोई।।

सीस अर्पण करके ते कोई, उस शब्द ते ओ खलोवेगा।

उस शब्द ते ओ खलोवेगा, उस शब्द ते ओ खलोवेगा सजन।।

समभाव समदृष्टि विच केहड़ा है सपुत्र, जेहड़ा फ़स्ट दा नतीजा सुनावेगा।

सोई ईश्वर परमात्मा परमेश्वर, ओही ब्रह्म पदवी नूं पावेगा।

ओही ब्रह्म पदवी नूं पावेगा, ओही ब्रह्म पदवी नूं पावेगा सजन।।

समभाव समदृष्टि दा, जेहड़ा सजन प्रसंग चलावेगा।

आत्मपद दी प्राप्ति फिर, ओ किस तरहां न ओ पावेगा।

फिर किस तरहां न ओ पावेगा, किस तरहां न ओ पावेगा सजन।।

समभाव समदृष्टि विच आप चलो, सजनां नूं चलना सिखाना जे।

फिर फ़स्ट निकलो सारी दुनियां ऊपर, रौशन नाम कहाना जे।

फिर फ़स्ट निकलो सारी दुनियां ऊपर, रौशन नाम कहाना जे सजन।।

(सजन श्री शहनशाह हनुमान जी कह रहे हैं)

समभाव समदृष्टि ओ साजन जी, दयालु कोलों समझ लवो ओ बात।

परचे जगह जगह लिखने हिन, दयालु आप समझावनगे इतिहास।

दयालु आप समझावनगे इतिहास, दयालु आप समझावनगे इतिहास।।

समभाव समदृष्टि दा जेहड़ा सजन, शब्द जल्दी करेगा ओ तैयार।

जेहड़े नाम नाल जिस सजन नूं है जे ओ प्यार।

ओसे रूप विच आके होवनगे, ओ होवनगे मददगार सजनों।।

फिर जित जित है उस सजन दी, फिर कदे नहीं ओ खांदा हार।

फ़स्ट निकले सारी दुनियां ते, जयकार जयकार जयकार।।

शब्दः-

सजनों समभाव समदृष्टि नूं धारण करो।

वैरी दुश्मन शत्रु सारे इक सजन दृष्टि फड़ो।।

सजनों आज तो एक बार सच्चे दिल से यह सत्य बोल देना कि क्या आप इसी जीवन में आत्मिकज्ञान की प्राप्ति करना चाहते हो?

'हाँ जी'।

तो फिर इसके प्रति अपने मन में प्रबल इच्छा पैदा करो। वह इच्छा इतनी प्रबल हो कि आपके मन में अन्य किसी भी प्रकार की इच्छा घर न कर सके। फिर समझ लो कि अन्य किसी प्रकार की इच्छा आप पर हावी न हो पाए यानि अन्दर केवल आत्मपद प्राप्ति की ही प्रबल इच्छा-शक्ति हो। ऐसा करना आत्मोद्धार के लिये आवश्यक मानो। यह तो हुआ अपना उद्धार और फिर अपनों का भी सुधार करने के लिये तैयार होना है। सजनों यह एक उत्तम इच्छा है। अभी आपने सुना है कि जो भी आत्मपद की प्राप्ति करना चाहता है, उसको समभाव-समदृष्टि का प्रसंग चलाना आरम्भ करना होगा अर्थात समभाव समदृष्टि के प्रति

पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने हेतु सहज प्रयोगात्मक ढंग से आपस में मिल-बैठ चर्चा करनी होगी। आप अपने घर-परिवारों में व दोस्तों, सहेलियों के साथ समभाव-समदृष्टि का प्रसंग आज से ही चलाना आरम्भ कर दो। अगर मंजूर है तो जोर से जयकारा लगानाः-

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

अब ऐसा पुरुषार्थ दिखाने में जो-जो निश्चित रूप से सफल होकर दिखायेगा, केवल वही जयकारा बोलेगाः-

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय

अब इस 'जय' को याद रखा तो निःसन्देह जगत में आपकी भी जय सुनिश्चित है। इस सन्दर्भ में आपको आज से ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में समभाव-समदृष्टि के जितने भी कीर्तन हैं वे सब अर्थ सहित समझने हैं। इस हेतु 'सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ अनुसार-समभाव समदृष्टि' नामक पुस्तक में ये कीर्तन अर्थ सहित संकलित है। अतः रोज दो कीर्तन अर्थ सहित पढ़ो-समझों व वर्त वर्ताव में लाते हुए उनका परिवार में या आपस में प्रसंग चलाओ। एक-दूसरे से इन अर्थों के अनुरूप नित्य बात करनी है। सजनों जानो कि इस विधि से आपको अत्याधिक लाभ पहुँचने वाला है। याद रखो जो सजन भी इस युक्ति को अमल में लाकर समभाव-समदृष्टि हो जाएगा उसे पुरस्कार स्वरूप दिव्य दृष्टि का सबक़ मिल जाएगा। फिर वह उस सबक का अनुशीलन करते हुए त्रिकालदर्शी हो जाएगा। सोचो, कितना बड़ा ईनाम, कितना बड़ा पुरस्कार आपको मिलने वाला है। इस ईनाम प्राप्ति के उपरान्त जगत से पूर्णतःः आज़ाद हो अपने सच्चे घर में स्थित हो जाओगे। मन्जूर है जी?

'हाँ जी'।

सजनों कितनी अच्छी बात हो यदि हम सब कलियुग के प्रभाव से ऊपर उठकर, दिव्य-दृष्टि का सबक़ लेकर और त्रिकालदर्शी बन अपने यथार्थ परमार्थ स्वरूप से परिचित हो जाएं व 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर सुदृढ़ता से खड़े हो जायें। सजनों निश्चित रूप में यह अपने आप में कमाल की बात है। अतः आप सबसे हमारी यही प्रार्थना है कि यह कमाल करके दिखाओ, इसमें कदापि हार मत खाना क्योंकि ऐसे सुनहरी अवसर की पुनरावृत्ति नहीं होती। इस संदर्भ में सजनों अपने आप को सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर होने के नाते अत्यन्त भाग्यशाली मानो। ठीक है जी?

'हाँ जी'।

'हाँ जी' कहा है तो आपने निश्चित रूप से एक महीना यह पुरुषार्थ करके दिखाना है। जिनके संग भी आप यह प्रसंग चलाओगे उन सबको लेकर पन्द्रह अगस्त, बृहस्पतिवार सुबह दस बजे सपरिवार यहाँ पधारना है। उस दिन दस बजे से लेकर दो बजे दोपहर तक सभा-भवन में कार्यक्रम चलेगा। उस प्रोग्राम में जितने भी सजन विराजमान होंगे उनमें से किसी को भी इशारा करके बुलाकर कहा जा सकता है कि आओ जी, जी-आयां नूं, यहाँ आकर समभाव-समदृष्टि के विषय में कुछ तो बताओ। सजनों अपनी आयु को भूल जाओ, बचपन में आ जाओ। अब यदि बचपन में ही आपने समभाव-समदृष्टि का सबक़ सीख लिया तो हम दावे से कह सकते हैं कि आप दोबारा युवा-अवस्था में आ जाओगे। सजनों जानो फिर यह आपकी धरोहर हो जायेगी। जैसा भाव होगा वैसी ही भावना पनपेगी और जैसी भावना हुई वैसा ही आत्म-दर्शन होगा। तब इस सत्य को जान जाओगे कि मैं यथार्थ में क्या हूँ? फिर जो चिर आनन्द का अनुभव उसके बाद होगा, वह संसार की किसी भी वस्तु से प्राप्त नहीं हो सकेगा क्योंकि वह अटल होगा और सदा के लिये होगा जबकि बाकी सब तो नाशवान होता है। इस महत्ता के दृष्टिगत आपने अभी तक जितने भी नकारात्मक भाव अपना रखे हैं और उन के अधीन बने हुए हो, उनको आज व अभी से जय-सियाराम जी कर दो। उन्हें कहो कि एक महीना अपने घर में रहो, फिर आपको उनके बगैर रहने की आदत पड़ जायेगी और अच्छा महसूस होगा। जैसे ही अच्छा महसूस होगा, फिर आप उन्हें कहोगे कि हे सजन जी ! आप अपने घर में ही रहो, मैं अब विश्राम में हूँ। अतः मानो कि आपके पास खालिस सोना होने का और परमार्थी धन से मालो-माल होने का यह सुनहरी मौका है। इस मौके का लाभ उठाओ और फिर शान से जीवन बिताओ। अब आगे सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

प्रीति लगाई ओ प्रीतम नाल, प्रीत हट गई ओ सब दे नाल।

प्रीतम है जे ओ परवरदिगार, मगरों ओ मगरों लह गया जगत जंजाल।।

प्रीतम दी प्रीति ने सब कुछ दिखाया है।

प्रीतम ही प्रीतम से असां सब कुछ पाया है।

प्रीतम दी प्रीति ने रोंदियां नूं हसाया है, प्रीतम दी प्रीति ने रोंदियां नूं हसाया है।।

हृदय में हृदय में खिड़ी ओ बहार है, मिल पये मिल पये ओ सिरजनहार है।

श्री राम रमणे वाले दी मूर्ति विशाल है।

हर विच वस्से हर विच दिस्से मूर्ति कमाल है।।

श्री राम ओही रहीम ओही, कृष्ण ओही करीम ओही।

ओही तो निरंकार है, ओही तो निरंकार है।।

ओही तो निरंकार है, ओही तो निरंकार है।

हर विच वस्से हर विच दिस्से मूर्ति कमाल है।।

श्री राम रमणे वाले दी मूर्ति विशाल है।

हर विच वस्से हर विच दिस्से मूर्ति कमाल है।।

ईश्वर ओही परमात्मा ओही, ओही तो सिरजनहार है।

हर विच वस्से हर विच दिस्से मूर्ति कमाल है।।

श्री राम रमणे वाले दी मूर्ति विशाल है।

हर विच वस्से हर विच दिस्से मूर्ति कमाल है।।

एक ख्याल एक दृष्टि मूर्ति विशाल है, एक दृष्टि एक दर्शन मूर्ति कमाल है।

श्री राम रमणे वाले दी मूर्ति विशाल है।

हर विच वस्से हर विच दिस्से मूर्ति कमाल है।।

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

साजन जी हर समय तुसां रिहा करो साडे कोल।

असां हर समय रिहा करिये तुहाडे कोल।

तूं मैं दे विच फ़रक न कोई, इको नाम कहाया करो।।

इस कीर्तन में कितना सुन्दर और शुभ सन्देश निहित है। प्रभु कह रहे हैं कि हे सुरति ! हमारे संग ही रहा करो और इको नाम कहाया करो, जैसे सीता-राम, लक्ष्मी-नारायण बोलते हैं। पहले भी आपको यह बताया हुआ है कि सुरत शब्द के संग बनी रहे तो शोभायमान होती है और तभी ज्ञानमय अवस्था में सधी रहती है। सुरत शब्द संग बनी रहे तो यह जगत सुरत को हर नहीं सकता, जैसे रावण सीता को छल से हर कर ले गया था। आपने इसके प्रति सुचेत रहना है ताकि आपकी सुरत यानि ख़्याल को जगत अपने साथ न जोड़ सके और जगतीय बातें आपके मन में न चलें। इसके स्थान पर सुरत शब्द संग सदा बनी रहे और शब्द की ही चाल पकड़े। अब शब्द की चाल पकड़ने पर सुरत-शब्द एकरूप हो जायेंगे। सजनों यदि दोनों का स्वाभाविक रूप, ज्ञानरूप व क्रियाएँ एक सी हों जाएँ तो देखने वाले को भी और कुल संसार वालों को भी कितना अच्छा लगेगा। इस तरह आपकी उत्तमता की झलक आपके मन-वचन-कर्म द्वारा होगी और आप यशस्वी बनोगे। सजनों वास्तव में अगर यश प्राप्त करना चाहते हो तो जैसे अभी कहा है कि बाल-अवस्था का भक्ति भाव छोड़कर युवा-अवस्था का भक्ति भाव अपनाकर, समभाव समदृष्टि हो जाओ। इस संदर्भ में चाहे आप कितने ही बूढ़े क्यों न हों, उमर को न देखो अपितु भावात्मक बदलाव ले आओ। अतः मानो कि अब तो हम सब बचपन के माध्यम से जवान होने वाले हैं, अतः खुश हो जाओ। सम्भव है कि आपका लाठियों का सहारा छूट जाये, अतः अपने सुख के लिये प्रयास करो। इसमें आपका अपना स्वार्थ या मतलब भी निहित है। इस मतलब को तरीके से सिद्ध कर आपने उत्तम पुत्र बनना है, स्वस्थ बनना है, मानसिक रूप से स्थिर

बनना है और स्वतन्त्र बनना है। हमने पन्द्रह अगस्त इसलिए रखा है कि जगत वाले भी उस दिन स्वतन्त्रता दिवस मनाते हैं। उनका तो वह दिवस स्वार्थी होता है पर हम इसे परमार्थी रूप से मनाएंगे। अब बताओ कि स्वतन्त्र बुद्धि कौन है?

'मौन'

सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ही स्वतन्त्र बुद्धि हैं क्योंकि वह किसी को भी कुछ अनुचित करता हुआ देखकर उसकी चाल नहीं पकड़ते अपितु जो कुछ भी मन-वचन-कर्म द्वारा करते हैं, अन्तर्निहित आत्मज्ञान के अनुसार ही करते हैं। बस आपको भी ऐसा करना सुनिश्चित करना है। इतना सा आत्म-नियन्त्रण रख सुनिश्चित करने से हृदय, बुद्धि, वृत्ति, स्मृति सब कुछ निर्मल हो जाएँगे। फिर आप निर्मलता के प्रतीक बन जाओगे और बेदागों चोला पहन, अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम पाने के हकदार बन जाओगे। सजनों अगर आप इतना सा काम कर लो तो आपका निरन्तर सत्संग में आना या फिर घर में बैठकर सत्संग सुनना सफल हो जायेगा यानि आपकी मेहनत साकार हो जायेगी। अतः अपने पर कृपा करो और सन्मार्ग पर आने हेतु दो कीर्तन अर्थों सहित समझते हुए व व्यवहार में उतारते हुए थोड़ा-थोड़ा बदलाव प्रतिदिन करो ताकि पन्द्रह अगस्त तक आपका बदलाव सम्पूर्णता को प्राप्त हो जाये। आप उस दिन स्वार्थ से परमार्थ बनकर यहाँ आओ तो आपके चेहरों की कान्ति भी अलग ही होगी। अतः हिम्मत दिखाना।

नोटः- अगले इतवार सावन की मीटिंग है अतः मीटिंग पर सबने आना है क्योंकि मीटिंग पर सब सजनों का आना अनिवार्य होता है। इसके बाद फिर सात सितम्बर को समभाव दिवस है। हमारे लिये बनता है कि हम पन्द्रह अगस्त तक समभाव-समदृष्टि का मुकम्मल अर्थ सहित पठन कर, परस्पर प्रसंग चलाने के योग्य बन जाएं। इसके लिए आज से ही प्रयास आरम्भ कर देना है। इसमें नामी या बेनामी होने का कोई सवाल नहीं है क्योंकि यह ज्ञान प्राप्त कर अपने यथार्थ में आने की बात है, अतः सबका अधिकार है। फिर आपने सात सितम्बर की अभी से तैयारी शुरु कर देनी है।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।